FOR BLIS STUDENTS

Course : - Bachelor of Library and Information Science

(BLIS)

Paper : - Paper-IV

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science

School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: ISBD

CONTENTS

1. Type Of ISBD
2. Purpose Of ISBD

13.3 अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत ग्रंथपरक विवरण (International Standard Bibliographic Description) :

ग्रंथपरक विवरण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सुसंगता तथा मशीन पठनीय डाटाबेस की प्रक्रिया का व्यवहार को बढ़ाने की योजना ने सार्वभौमिक ग्रंथात्मक नियंत्रण के विकास के लिए मानक अभिलेख प्रारुप की आवश्यकता पर बल दिया । ग्रंथात्मक नियंत्रण से संबंधित ये विनिमय प्रारुप राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ग्रंथपरक एजेंसियों के मध्य ग्रंथात्मक डेटा के हस्तान्तरण एवं समावेश को सुगम बनाते हैं ।

इफला द्वारा 1961 में पेरिस में आयोजित सूचीकरण सिद्धांतों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत ग्रंथपरक विवरण हेतु भूमिका तैयार की तथा 1969 में कोपेन हेगन में आयोजित सूचीकरण विशेषज्ञों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में माइकल गरिमेन के प्रतिवेदन की समीक्षा की गई और उसके आधार पर एक कार्यकारी समूह की स्थापना की गई । इस कार्यकारी समूह की संस्तुति के आधार पर 1971 में अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत ग्रंथपरक विवरण (इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड बिब्लियोग्राफिक डिस्क्रिप्शन) का प्रकाशन हुआ । इसके निर्धारण में अन्य विशिष्ट पाठ्य सामग्री की आवश्यकता को नहीं रखा गया था, अत: बाद में अन्य विशिष्ट सामग्री हेतु अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत ग्रंथात्मक विवरण की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी । 1974 में अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत ग्रंथपरक विवरण (मोनोग्राफ) का संस्करण प्रकाशित किया गया तथा बाद में इसे आई.एस.ओ. द्वारा अनुमोदित किया गया । इसकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर इफला की सूचीकरण समिति ने अन्य प्रकार की पाठ्य सामग्री जैसे सीरियल्स आदि हेतु भी अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत ग्रंथपरक विवरण तैयार करने का निश्चय किया ।

आई.एस.बी.डी. (मोनोग्राफ) से प्रारंभ होते हुए अनेकों आई.एस.बी.डी. विकसित हुए जिसमें आई.एस.बी.डी. (जी) भी सम्मिलित है ।

आई.एस.बी.डी. (एम) को विभिन्न राष्ट्रीय वाङ्मय सूचियों ने अपनाया तथा इसके मूल पाठ का अनुवाद भी विभिन्न भाषाओं में किया गया । यह अनुभव किया गया कि मुद्रित शब्द, प्रलेखीय संचार का एक मात्र माध्यम नहीं है जिसके द्वारा व्यक्तिगत और संस्थागत सम्प्रेषण की आवश्यकता की पूर्ति हो । अत: पुस्तक की अपेक्षा प्रलेखिय सामग्रियों के लिए मानक विवरणीय संरचना की आवश्यकता अधिक अनुभव किया गया । तत्पश्चात् 1977 में अप्रलेखीय सामग्री के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रंथात्मक विवरण प्रकाशित किया गया ।

सन् 1974 में एएसीआर को आई.एस.बी.डी. (एम) के अनुरूप पुनरीक्षित कार्य प्रारंभ हुआ तथा इसका मुख्य उद्देश्य मुद्रित मोनोग्राफ एवं पुन: उत्पादित मुद्रित मोनोग्राफ हेतु ग्रंथपरक विवरण नियम सम्मिलित करना था, इसके उपरान्त ज्वाइंट स्टीयरिंग कमेटी फार रिविजन ऑफ एएसीआर ने सामान्य आई.एस.बी.डी. का अनुभव किया जो सभी

प्रकार के पुस्तकालय सामग्री के लिए उपयुक्त हो एवं इस हेतु इफला कमेटी ऑन कैटालॉगिंग के समक्ष 1975 में प्रस्ताव प्रस्तुत किया । इस प्रकार आई.एस.बी.डी. (जी) का प्रकाशन 1977 में हुआ ।

अन्य आई.एस.बी.डी. यथा आई.एस.बी.डी. (एस) फार सीरियल्स, आई.एस.बी.डी. (एनबीएम) फार नान् बुक मेटेरियल्स जिसमें ऑडियो विजुअल सामग्रियाँ सम्मिलित है, और आई.एस.बी.डी. (सी एम) फार कारटोग्राफिक मेटेरियल्स साथ-साथ विकसित हुए परिणामत: एएसीआर के बाद के संस्करण में ऑडियो-विजुअल एवं विशिष्ट निर्देशात्मक सामग्री और ध्वनि अभिलेखन हेतु नियमों का प्रावधान किये गये । पुन: आई.एस.बी.डी. (एम) का पुनरीक्षित आई.एस.बी.डी. (जी) के अनुरूप किया गया और इसका प्रथम मानक पुनरीक्षित संस्करण 1978 में प्रकाशित हुआ ।

सन् 1977 में ब्रुशेल में आयोजित इफला वर्ल्ड कॉंग्रेस में निर्णय लिया गया कि सभी प्रकार के आई.एस. बी.डी. को 5 वर्ष के अन्तराल पर पुनरीक्षित किया जाय । इसके बाद तात्कालिक चार आई.एस.बी.डी. यथा आई. एस.बी.डी. (सीएम), आई.एस.बी.डी. (एलबीएम), आई.एस.बी.डी. (एस) वर्तमान में इसे आई.एस.बी.डी. (सीआर) फार कन्टीनुईंग रिर्शोस कहा जाता है, और आई.एस.बी.डी. (एम) का पुनरीक्षित संस्करण 1981 में प्रकाशित हुआ ।

आई.एस.बी.डी. में मशीन पठनीय डेटा फाइल रखने का प्रावधान था, परन्तु जब आई.एस.बी.डी. (एलबीएम) के साथ आई.एस.बी.डी. (सीएम), आई.एस.बी.डी. (एम) तथा आई.एस.बी.डी. (एस) की समीक्षा इफला द्वारा गठित आई.एस.बी.डी. समीक्षा समिति द्वारा सन् 1931 में की गयी तथा यह निर्णय लिया गया कि द्रुत वृद्धिशील आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए एक अलग आई.एस.बी.डी. कम्प्यूटर फाइल्स के लिए तैयार किया जाय । कम्प्यूटर हेतु प्रोग्राम और डाटा फाइल्स के विकास के फलस्वरूप माध्यम जटिल रूप धारण किये तथा पुस्तकालयों में अधिक मात्रा में संग्रहित होने लगे । अत: उनके वाङ्मयी नियंत्रण की आवश्यकता हेतु आई.एस.बी.डी. (सीएफ) कार्यकारी समूह की स्थापना 1986 में की गई तथा 1990 में आई.एस.बी.डी. (सीएफ) का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ ।

मल्टीमीडिया के आगमन, ऑप्टिकल टेक्नोलॉजी के विकसित होने, वर्ल्डवाइड वेब तथा इन्टरनेट पर रीमोट इलेक्ट्रॉनिक रिर्सोस की उपलब्धता तथा इलेक्ट्रॉनिक रिर्सोस के पुनरूत्पादन से यह अनुमान किया गया कि आई.एस. बी.डी. (सीएफ) को चाहिए कि वह इन विकासों को वाङ्मयी अनुप्रयोग में लाये । इसके लिए एक कार्यकारी समूह का गठन सन् 1994 में किया गया तथा 1995 में ड्राफ्ट का द्वितीय संस्करण तैयार किया गया और उन्हें विश्वव्यापी पुनर्निरीक्षण के लिए पाठकों, पुस्तकालयों, संघों तथा राष्ट्रीय पुस्तकालयों को वितरित किया गया । परिणामस्वरूप इसमें अनेकों सुधार हुए तथा इसके नवीन नामकरण पर विचार कर उपयुक्त पद 'इलेक्ट्रॉनिक' रीसोर्स चुना गया ।

13.3.1 आई.एस.बी.डी. के प्रकार (Types of ISBD) :

विभिन्न प्रकार के सामग्रियों के लिए समय-समय पर इसका भिन्न-भिन्न प्रकाशन किया गया, जिसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है :

आई.एस.बी.डी.	प्रथम संस्करण	पुनरीक्षित संस्करण
● आई.एस.बी.डी. (एम) मोनोग्राफिक प्रकाशन	1974	1978, 1987, 2002
● आई.एस.बी.डी. (एस) सीरियल्स	1974	1977, 1988, 2002 आई.एस.बी.डी. (सीआर) के रूप में
● आई.एस.बी.डी. (जी)	1973	1992, 2004
● आई.एस.बी.डी. (एलबीएम) नान बुक मेटेरियल्स	1977	1987
● आई.एस.बी.डी. (सीएम) कारटोग्राफिक मेटेरियल्स	1977	1987
● आई.एस.बी.डी. (ए) ओल्डर मोनोग्राफिक प्रकाशन (एन्टीक्वारियम)	1980	1991
● आई.एस.बी.डी. (पीएम) प्रिंटिड म्यूजिक	1980	1991
● आई.एस.बी.डी. (सीएफ) कम्प्यूटर फाइल्स	1990	1997 में आई.एस.बी.डी. (ई.आर.) के रूप में
● आई.एस.बी.डी. (ई.आर) इलेक्ट्रॉनिक रीसोर्स	1997	
● आई.एस.बी.डी. (सीआर) सीरियल्स एण्ड आदर कन्टीन्यूयिंग रीसोर्स	2002	

13.3.2 आई.एस.बी.डी. [ISBD (G)] :

यह सभी प्रकार के सामग्री जो सामान्यत: पुस्तकालय में संग्रहित किया जाता है, उसका विवरण एवं पहचान के लिए आवश्यक तत्वों का तालिका हैं । इसमें तत्वों के विवरण के क्रम तथा प्रत्येक तत्व को निधारित विरामादि चिन्हों की सहायता से निर्देशित किये जाने का प्रावधान है । यह सूचीकार या राष्ट्रीय वाङ्मयी अभिकर्त्ता के प्रत्यक्ष प्रयोग हेतु नहीं होता है । वस्तुत: यह विभिन्न सामग्रियों हेतु विशिष्ट आई.एस.बी.डी. के लिए आधार होता है । यह आई.एस.बी.डी. के संशोधन हेतु आधार भी प्रदान करता है । यह आशा की जाती है कि सूची संहिताओं के निर्माण एवं विकास के प्रयासरत राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय समितियाँ सामग्रियों के विवरण हेतु इसका प्रयोग आधार के रूप में करेंगे । अत: राष्ट्रीय वाङ्मयात्मक एजेन्सीयों या सूचीकरण एजेन्सीयों के

लिए कम्प्यूटर पठनीय या मुद्रित स्वरुप में वाङ्मयात्मक अभिलेख विवरण प्रस्तुत करने हेतु एक आधार प्रदान करता है । यह सभी प्रकार के सामग्रियों हेतु प्रचलित एक एकीकृत सामान्य प्रारुप है जिसमें डेटा अवयवों तथा विस्तार के क्रम को आठ क्षेत्रों में रखा गया है ।

13.3.3 आई.एस.बी.डी. का उद्देश्य (Purpose of ISBD) :

आई.एस.बी.डी. में व्यापकता तथा डाटा अवयवों का निश्चित क्रम होता है । विभिन्न ग्रंथपरक अवयवों के मध्य परिसीमा के रूप में विराम चिन्हों का उपयोग किया जाता है । अत: आई.एस.बी.डी. सूचीकरण की एकरूपता तथा ग्रंथपरक सूचनाओं के सम्प्रेषण के प्रमुख साधन है । आई.एस.बी.डी. का प्राथमिक उद्देश्य चतुर्दिक विश्व में योग्य विवरणात्मक सूचीकरण के लिए वाङ्मयी अभिलेख का अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय हेतु राष्ट्रीय ग्रंथात्मक एजेन्सीयों और अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकालय एवं सूचना समुदाय के बीच सहायता प्रदान करना है । इसका प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :

(i) पारस्परिक विनियम हेतु विभिन्न स्त्रोतों से अभिलेख निर्मित करना ताकि एक राष्ट्र में निर्मित अभिलेख आसानी से अन्य देश के पुस्तकालय सूची या अन्य वाङ्मयी सूची में समाहित किया जा सके ।

(ii) भाषा अवरोध को हटाते हुए अभिलेख की व्याख्या करने में सहायक होना ताकि एक भाषा के अभिलेख को अन्य भाषा के उपयोक्ता भी आसानी से व्याख्या कर सके ।

(iii) ग्रंथपरक अभिलेख को इलेक्ट्रॉनिक फार्म (मशीन पठनीय प्रारूप) में परिवर्तित कर सुगमता प्रदान करना ।